IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वाल्मीकि रामायण में जीवनमूल्य

डॉ.पुष्पा देवी

सहायक आचार्य संस्कृत,

(विद्या संबल योजना)

राजकीय महाविद्यालय छोटी सरवन बांसवाड़ा राजस्थान

सारांश

मानव विधाता की सर्वोत्कृष्ट सृष्टि है। 'न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्' इसका आशय है कि मानवजीवन सर्वाधिक मूल्यवान् है। व्युत्पत्तिपरक दृष्टि से देखा जाये, तो 'मूल्य' शब्द मूल धातु यत् प्रत्यय करने पर निष्पन्न हुआ है। भवादिगण मूल धातु प्रतिष्ठार्थक है–मूल प्रतिष्ठायाम्। पाणिनीय सूत्र–**नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्थतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसम– समितसम्मितेषु (4/4/91)** से मूल्यानि आम्नाय से मूल्यम् अर्थप्राप्त होता है। मूल्य शब्द अंग्रेजी के शब्द का समानार्थी है। Value शब्द लैटिन के Valere से बना है। जिसका अर्थ श्रेष्ठ, सुन्दर होता है। मूल्य शब्द के अर्थ में शिवं व सुन्दरं का समन्वय हुआ है।

आज मूल्य शब्द दर्शनशास्त्र, समाजविज्ञान, अर्थशास्त्र आदि के साथ सम्बन्धित होकर अनेकार्थी हो गया है। मानवमूल्यों की विवेचना मुख्यतः दर्शन ग्रन्थों के आधार पर की जाती है। समस्त धर्म, दर्शन, साहित्य जीवनमूल्यों की अभिव्यक्ति करते रहे हैं। उच्चतम जीवन की उपलब्धि के लिए मानवता जिन–जिन तत्त्वों का आदान करती है, वे जीवनमूल्य हैं। जीवनमूल्यों में मानवता के प्रत्येक क्षेत्र को उत्कृष्ट बनाने की क्षमता है। मूल्यों की नैतिकता भी समाहित रहती है और नैतिकता से सम्बद्ध मूल्यों को ही नैतिक मूल्य कहते हैं।

शब्द कुंजी :– जीवन मुल्य, जगत, जीवन चेतना, रामायण, दर्शनशास्त्र, समाजविज्ञान।

आधुनिक युग में मूल्य मीमांसा द्रुत गति से पल्लवित हो रही है। आज का अध्येयता मूल्य सिद्धान्त का अध्ययन करते समय मूल्य शब्द के प्रति गम्भीर है। मानव की विकास यात्रा में मूल्य ही दीपस्तम्भ रहे हैं। आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, साहित्यिक, राजनैतिक क्षेत्र में

जीवनमूल्यों की स्थापना जगत् कल्याण के लिए आवश्यक रही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जीवनमूल्य संस्कृत के स्वतन्त्र विषय के रूप में अपेक्षाकृत नूतन विषय अवश्य हैं, परन्तु मानवीय संरचना सदैव मूल्याश्रित रही है। संस्कृत वाङ्मय में जीवनमूल्यों का व्यापक विवेचन है, जिससे विश्व संरचना में जीवनमूल्य की पहचान मिलती है तथा मानव का सर्वागींण विकास होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जीवनमूल्यों की प्रासंगिकता और बढ़ गई है, क्योंकि प्रेम,अहिंसा, सहिष्णुता, आदि सामाजिक मूल्य अपने महत्त्व से निरन्तर क्षीण हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति के वे आदर्श एवं संकल्प आज युगों की प्रवाहमान धारा के मध्य में अटक गये हैं, जिससे मनुष्य कर्तव्य–अकर्तव्य के यथार्थ स्वरूप से अनभिज्ञ हो रहा है। इसलिए मूल्यों को स्थापित करके जगत् का कल्याण सम्भव है तथा समाज, राष्ट्र और विश्व की उन्नति में योगदान दिया जा सकता है।

मूल्य का आशय यहाँ व्यावहारिक जगत् में उच्चस्तरीय जीवन का मापदण्ड है, जो आदर्शवत् हमारा पथ निर्देशित करें। 'स्व' से ऊपर 'पर' का चिन्तन मूल्य की भूमिका का प्रतिरूप है। लोककल्याण या आत्मोत्कर्ष के लिए विषयजन्य स्वसुख का त्याग और सत्पथ का सदा अवलम्बन, शिवतत्त्व का वरण, श्रेय है। श्रुति कहती है कि श्रेय–प्रेय दोनों परस्पर विपरीत है, इसलिए प्रेय का सर्वथा त्याग कर श्रेय का वरण ही शोभायुक्त है–**''श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते।'' (कठोप. 1/2/2)**[1]श्रेयमार्ग का ग्रहण करने वाले का शुभ होता है–**''श्रेयः आददानस्य साधुः'' (कठोप. 1/2/1)।**[2]

मनुष्य की प्रवृत्ति के आधार पर जीवनमूल्य के दो प्रकार है–श्रेयस् व प्रेयस्। ये परस्पर विरुद्धधर्मा है, परन्तु जीवन चेतना में ये नीरक्षीरवत् हैं। प्रयोजन की पृथकता मूल्य की भिन्नता को निर्धारित करती है। पुत्र–वित्त लोकादि एषणाओं के प्रयोजन से अभ्युदय की और स्वर्ग कामना से निःश्रेयस् की सिद्धि होती है। निःश्रेयस् के नित्य प्रयोजन से ईप्सित अर्थ का साक्षात्कार, जीवन का परममूल्य पुरुषार्थ की सम्यक् लब्धि है। आदर्श चरित्रमूल्य मानवता का हितसाधन करता है। चरैवेति जीवन का परम धर्म है। मूल्य अन्तः पुरुष की चेतना का विकासमान गुण है। आचारसंहिता बुद्धि मूल्य का हेतु है। सदिच्छा की सन्तुष्टि मूल्य है। मूल्य जीवन चेतना के उद्गामी विकास का उत्पादित गुण है। सदिच्छा से उत्पन्न, सद्भावना से अनुप्राणित, विवेक से द्योतितमूल्य जीवन का एक उदात्त गुण है। (रामायण 4/25/8)[3]

हनुमान् जी के प्रति सीता जी का कथन –**''कल्याणीवत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मे। एति जीवन्तमानन्दो नरं वर्ष शतादपि।।'' (रामायण 5/34/6)**[4] जो जीता रहता है, उसे आनन्द मिलता है। आनन्दयुक्त जीवन रामायण का परम मूल्य है। जीवन साधनगत और आनन्द साध्यगत मूल्य है। धैर्य के साथ यह उज्ज्वल आशावाद मानवता को कभी प्रियमाण नहीं होने देता है। जीवन मानवता का मूल्य है, आनन्द उसका साक्षात्कार मनुष्य की पर्येषणा धर्म–अर्थ–काम इस त्रिवर्ग के साधन में निरन्तर रत रहती है। यह जीवन का साधनगतमूल्य है। लोक मांगल्यसर्वभूत हिताय–सत्यशिव का साक्षात्कार साध्य है।

अधर्म–अनार्यत्व यह अपमूल्य है। सद्धर्म, आर्यत्व यह शुभमूल्य है। सतत् संघर्षद्वारा अधर्म पर धर्म की विजय यह मूल्य जीवन का आदर्श है। वाल्मीकि का यथार्थ दर्शन है, प्रेम को धर्म सम्मत् जीतकर उसे श्रेय रूप में रूपान्तरित करना। रामायण में अन्योन्य विरोधी मूल्यों का निरूपण किया गया है, जिसमें भोगपरक, धर्ममूलक, लोकपरक, परलौकिक और काव्यनिष्ठ जीवनमूल्य परिलक्षित होते हैं। जिसका विवेचन निम्नलिखित है–

भोगपरक मूल्य : सीमित कलावधि में आसक्त मन द्वारा विषयवस्तु के माध्यम सेसुख का एकांत आस्वादन भोग है। यह दैहिक स्तर पर इन्द्रियों के विषय का मनोनुकूल चर्वण व्यापार है। इस प्रकार की भोगासक्ति को वाल्मीकि ने देह धर्म कहा है। सुग्रीव के सुखोपभोग के प्रसंग में तारा का लक्ष्मण के प्रति कथन –**''देहधर्मगतस्यास्य परिश्रान्तस्य लक्ष्मण'' (रा. 4/35/9)**[5] अर्थात् इस भोग से व्यक्ति परिश्रांत होता है, उसकी कर्तव्य स्फूर्ति समाप्त हो जाती है। इसकी अपेक्षा उचित सुख में अपनी आत्मा को संप्रयुक्त करना हितकर है। राम की उक्ति भरत के प्रति–**''आत्मा सुखे नियोक्तव्यः सुखभाजः प्रजाः स्मृताः'' (2/105/31)**[6] भरत के सन्दर्भ में यहाँ सुख का अर्थ होगा कल्याण का साधनभूत धर्मजनित सुख। समस्त प्रजा, प्रकृतिवशात् सुख की कामना करती है। वह सुखभोग का अधिकारी है। प्रजाः सुखभाजः में जीवन का एक चिरंतन सत्य निहित है, किन्तु वहीं राम, राजा को आनुभविक भूमि में सुखोपभोग का नीतिगत परामर्श करते हैं। भोग के चार स्तर रामायण में वर्णित हैं – ग्राम्य, गृहमेधी, राजन्य एवं आर्ष।

लोकपरक मूल्य : व्यावहारिक–सामाजिक और राजनीतिक के भेद से ये तीन प्रकार के हैं। **व्यावहारिक मूल्य**–बल, तेज, रयि, श्री, पराक्रम और आयुष्य के भेद से छः प्रकार का है। बल के अर्जन की प्रेरणा आत्मसंरक्षण वृत्ति से प्राप्त होती है। यह आन्तरिक ऊर्जा का व्यक्त रूप है, जो शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के स्तर पर स्थूल से सूक्ष्म होता हुआ व्यक्त होता है। सम्पूर्ण व्यक्तित्व को द्योतित करने वाला, शरीर के समस्त अवयवों से प्रतिभासित तत्त्व तेज है। शक्ति, साहस, उत्साह आदि का वीरतापूर्ण प्रदर्शन विक्रम है। धन प्रजा के हित के लिए साधनगत मूल्य है। रामायण की श्री या लक्ष्मी राज्य, धन, चारुता और सौभाग्य की द्योतक है। सीता समस्त श्रियों की एकमात्र श्री है–**''श्रियाः श्री भर्तृवत्सलाम्।''6–111–291**[7]आयुष्य साधन मूल्य है। राम द्वारा किया गया वृद्धद्विजवृंद आदर अनेक स्थलों पर वर्णित है–**''ते द्विजा त्रिविधं वृद्धा ज्ञानेन वयसौजसा 2–45–13।**[8] **विद्वान् वृद्धानां प्रतिपूजकः''2/1/14।।**[9]

सामाजिक मूल्य– इसके अन्तर्गत हित, योगक्षेम, बन्धुत्व, स्वस्ति, वाक्, विनय, पुरुषकार, अभय और यशस् आदि आते हैं। आनुभविक भूमि में कुछ पुरुष ऐसे होते हैं, जो समष्टि के हित में स्वहित का अन्तर्भाव करते हैं। प्रजाहित साध्यगत मूल्य है। व्यक्ति का निजगुण यदि चरित में आचरित होकर लोकोपकारक बन जाये, तो वही नैतिक भूमि का हितसाधक मूल्य चिरस्मरणीय होता है–''हा राम

सत्यव्रत दीर्घबाहो हा पूर्ण चन्द्रप्रतिमानवस्त्र। हा जीवनलोकस्य हितः प्रियश्च वध्यां न मां वेत्सि राक्षसानाम्॥[10] काव्य में यही स्थल रस ध्वनि के होते हैं, जहाँ सहृदय भाव लावण्य में यथेच्छ डूबता उतरता रहता है। इसमें सत्य का पावित्र्य, चन्द्र का चारुत्व, जीवलोक के हित के साथ अतीव प्रिय होते हुए भी, जानकी के कारुण्य से वाष्पीभूत होकर, हमें मर्माहत करते हैं। ''प्रजानां च हिते रतः।''1/1/121''अलभ्यलाभो योगः स्यात् क्षेमो लब्धस्य पालनम्। (ज्ञानवल्क्य स्मृति)[11]

सर्वसमर्थ राजा की प्रजा का योगक्षेम वहन कर सकता है। अयोध्यावासियों का विश्वास है कि–**''युष्माकं राघवोऽरण्ये योगक्षेमं विधास्याति। सीता नारीजन्यास्य योगक्षेमंकरिष्यति।। 2/48/19।**[12] भरत की धारणा है कि राम पादुका से सर्वलोक का योगक्षेम स्वतः सम्पादित होगा–**''एते हि सर्वलोकस्य योगक्षेमं विधास्यतः।'' (2/112/21)**[13] आजकल राजनीतिक भाषा में जिसे प्राण और धन की सुरक्षा कहते हैं, वही प्राचीनकाल का योगक्षेम है। स्नेह का तन्तु, रागद्वेषमय जीवन में प्रत्येक प्राणी को परस्पर आबद्ध करता है। स्नेह का उत्कर्ष प्रणय का प्रेम है। बंधुत्व–भाईचारे का नाता हमारे जीवन में विश्वतः व्याप्त है। बन्धु का सम्बन्ध किसी काल विशेष की अपेक्षा नहीं करता। मन में सौहार्द्र उत्पन्न होते ही बन्धुत्व प्रकट होता है–**''न कालस्याति बन्धुत्वं'' (4/25/7)**[14] रामायण में सौहृद बन्धु के अर्थ को कुछ अंशों में व्यक्त करता है। हनुमान् राम को अपना बन्धु स्वबन्धुमनुकीर्त्तयन् समझकर स्मरण करते हैं। स्वस्ति समष्टिगत कल्याण कामना का सूचक है, जिसमें व्यष्टि का हित स्वतः समाहित है।

अभिव्यक्ति का विकास के क्रम में सुगमतम साधन वाक् (वाणी) है। **''सर्वेषां वेदानां वागेकायनम्।''**[15]वाक् ब्रह्म जीव तत्त्व में प्रवेश कर जो कला विलास करता है, उसका प्रत्यक्ष प्रमाण आदिकाव्य है। वाल्मीकि के राम स्मित पूर्वाभिभाषी है। वाक् से सम्बन्धित अनेक विशेषण उनमें नित्य शोभायमान है। समाज में स्नेह शान्ति और सेवाभाव उत्पन्न करने के लिए वाक् एक सूक्ष्म उपकरण है, जिसकी साधना मन और क्रिया के साथ इसकी सामंजसता में सिद्ध होती है। कर्म साधना द्वारा साध्य प्राप्ति का उद्योग पुरुषकार है। पुरुषकार लोकजीवन का साधनगतमूल्य है। व्यक्ति इस मूल्य द्वारा अंततः विपदाओं पर विजय प्राप्त करता है। इसकी उपस्थिति से राष्ट्र का मनोबल महान् संकट में भी अडिग रहता है। वैदिक ऋषियों ने भय से त्राण पाने के लिए अभय की सोत्कण्ठ की याचना की है–**''यतो यतः समीहसे ततो नोऽभयं कुरु शं नः प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभयः।'' यजुर्वेद–36/22।**[16]मनुष्य निर्भय और शान्तिपूर्ण वातावरण में जीवन बिताना चाहता है। इसलिए प्राण में अभय की ज्योति का जाग्रत रहना अनिवार्य है।

राम का जीवन धर्म है। शरणागत को अभय प्रदान करना –**''अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम''6–18–34।**[17] अभय साधनगत मूल्य है, जिसका साध्य है, दुरित का क्षय एवं जीवन में सर्वभूतों में सुख का सम्पादन। यश के में जिजीविषा के साथ अमरत्व की उत्कृष्ट कामना रहती है, लोकसुख से अपने सुकृत की प्रशंसा का अपेक्षाकृत स्थायी रूप यश है। रामायण में यशस् मूल्य की वैदिक प्रतिध्वनि

सुनाई पड़ती है। राम का गुणानुवाद करते हुए सौमित्र की उक्ति–**"चन्द्रे लक्ष्मीः प्रभासूये गतिर्वायो भूवि क्षमा। एतच्च नियतं सर्वं त्वयि चानुत्तमं यशः।"**[18] मनुष्य के गुण, कर्म आदि साधन हैं और यश प्राप्ति उत्तम जीवन का एक प्रधान लक्ष्य होता है। यह साध्यगत मूल्य है। यश मनुष्य की समस्त क्रिया का राशीभूत फल है।

राजनीतिक मूल्य– सम्प्रभुतावाद, त्रिवर्गतन्त्र, राजा, ब्रह्मक्षत्र, शरण्यता और सर्वभूत– हितवाद रामायण के राजनीतिक मूल्य हैं। वाल्मीकि के राम के मतानुसार धर्म कोई भी हो, जो सत्य या धर्म सम्मत है, वह करणीय है। उनकी दृष्टि में ब्रह्म आदर्श और क्षत्र यथार्थ है और देवकालानुसार दोनों का सामंजस्य राष्ट्र के लिए हितकर होता है–**"यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना।"**[19] ब्रह्मक्षत्र में राजनीतिक जीवन का साधनगत मूल्य अधिष्ठित है और इसकी समाज सत्ता में राष्ट्र का कल्याण निहित है। इस सत्य का अनुभव वैदिक ऋषि आदिकवि को सामान्यतः संप्राप्त है।

धर्ममूलक मूल्यः धर्म या सत्य जीवन का अनुत्तम मूल्य है। पहले यह साध्य और अंत में मूल्य साक्षात्कार के समय यह साध्य हो जाता है। धर्म के चार चरण, सत्य–तप–दया–दान इसके अंश हैं। श्रेयस् सत् या शुभ का आचरण धर्म है। सामाजिक जीवन में धर्म के मुख्यतः तीन रूप प्रकट है–आत्मनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ और आनुष्ठानिका जीवन चेतना में गुण का विकसित मूल्य है इसका उन्मेष चित्त की नैतिक भूमि में होता है। सत्य, तप, आस्तिकता, शुचिता, अनिर्वेद और व्रत आत्मनिष्ठ मूल्य है। त्याग, दान, कारुण्य, शुश्रूषा, लोकहित और कर्मवाद वस्तुनिष्ठ मूल्य हैं अग्निहोत्र, संस्कार, सन्ध्योपासन, देवोपासन और स्वस्त्ययन आनुष्ठानिक मूल्य हैं। श्री राम के जीवन में धर्म में आनुष्ठानिक मूल्यों का व्रत रूप में निर्वाह करते हुए दिखाया गया है।

पारलौकिक मूल्य : रामायण में 'परलोक' धार्मिक जीवन का एक चिर ईप्सित मूल्य है। वाल्मीकि की मान्यता है कि स्वर्ग शुभकर्म का ही फल है। धीर पुरुष ही इस लोक का अधिकारी है। राम ने सत्य के द्वारा सभी लोकों पर विजय प्राप्त कर ली है। सत्य काम के लिए स्वर्ग की कामना नगण्य है। परलोक मनुष्य का धर्मार्जित फल है। अतः यह धर्मा साध्यगत मूल्य है।

काव्यमूल्यः संस्कृत के लक्षण ग्रन्थों में काव्य पुरुष के शरीर, गुण और आत्मा का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। माधुर्य आह्लाद, चारित्र्य मांगल्य और पूर्ण काव्यमूल्य माधुर्य किसी पद या अर्थ विशेष में नहीं अपने विषय के अनुकूल समस्त पर्यावरण में परिव्याप्त रहता है–**"अहो गीतस्य माधुर्य श्लोकानां च विशेषतः।।" 1/4/17।**[20]**"संहितौ मधुरं रक्तं सम्पन्नं स्वर सम्पदरा" – 01/4/81।**[21] श्रीराम का हनुमान के प्रति कथन–**"मधुरा मधुरालाप किमाह मम भामिनी। मद् विहीना वशरोहा हनुमान् कथयस्व मे।।" 5/66/15।**[22]भावजनित आनन्दानुभूति आह्लाद है। रामायण के श्रवण से **"आहलादयत् सर्वं**

गात्राणि मनांसि हृदयानि च।''1/4/33।[23]हर्ष, विषाद, शौर्य पराक्रम, कारुण्य आदि भावप्रणय अवसरों पर श्रोता के हृदय का द्रवित होना, रससक्ति होना आह्लाद है।

व्यक्ति और राष्ट्र के लिए चरित्र एक सर्व आधारित मूल्य है। सच्चरित्र जीवनसाधना द्वारा संघर्षों के बीच पलकर अर्जित किया जाता है। चरित्र का नियामक नैतिक तत्त्व होता है। रामायण का एक प्रयोज्य शाश्वत् मूल्य के रूप में आदर्श चरित्र का सृजन है। सत् का आचरण, शुभगुणों का जीवन में सन्निवेश और उनका व्यावहरण चरित्र का नित्य स्वभाव है। चरित्र राष्ट्र का मेरुदण्ड है। इस मूल्य के अनुपालन से आत्मसंतोष होता है, किन्तु इसके प्रकाश में लोक कल्याण का दीपक सदा ज्योतित रहता है। मांगल्य विश्वहित का द्योतक अतीव लोकप्रिय मूल्य है। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** इसी जीवनमूल्य का उद्‌गार है। संकटापन्न जीवन में इनकी कामना विश्वबन्धुत्व की परम सौहार्द्र की परिचायक है। वाल्मीकि के श्रेय, स्वस्ति और हित में मांगल्य का उदात्त भाव प्रतिध्वनित होता है। निखिल सृष्टि के बाधा रहित जीवन में इस आनन्द बिन्दु का वर्णन मांगल्य का विश्वरूप है। यह समष्टि के हृत कमल की दिव्यगन्ध है, जिसकी वास के लिए हर प्राण आकुल है। हम देवी का स्तवन 'सर्वमंगल्यं मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके' मन्त्र से करते हैं।

जीवन के समस्त द्वन्द्व का जिस तत्त्व में समाहार होता है, वह पूर्ण, वह ब्रह्म पूर्ण है और उससे निःसृत यह जगत् भी पूर्ण है, पूर्ण दर्शन या अध्यात्म का भी वरेण्य मूल्य है। काव्य का रस, कार्य कारण से रहित होने पर स्वयं में पूर्ण है। ब्रह्मानन्द सहोदर है, आनन्द ब्रह्म है, उसे किसी की अपेक्षा नहीं। शब्द द्वारा वह पूर्ण ब्रह्म को अभिषिक्त करना चाहता है। अभिव्यक्ति पूर्णतः व्यक्त होती है, तभी वह आनन्द का सृजन करती है। पूर्णता की अनुभूति शान्ति की अनुभूति है। पूर्णत्व काव्य का साध्यगत मूल्य है। सौन्दर्य, रस, आनन्द ये सभी स्वयं में पूर्ण है और प्रमाता को अनुभावन काल में पूर्णत्व का बोध कराते हैं। जीवन को खण्डशः नहीं समग्रतः चित्रित करने के कारण रामायण को पूर्णत्व की सिद्धि है, यही आदिकाव्य का परम मूल्य है।

सन्दर्भः

क. भारवि, माघ और श्रीहर्ष के महाकाव्यों में अभिव्यंजित जीवनमूल्य, डॉ. अल्पना भटनागर।

ख. भवभूति और जीवनमूल्य, डॉ. यादराम मीणा।

1कठोप. 1/2/2

2कठोप. 1/2/1

3रामायण 4/25/8

4रामायण 5/34/6

5रामायण 4/35/9

6रामायण 2/105/31

7रामायण 6–111/29

8रामायण 2–45–13

9रामायण 2/1/14

10वाल्मीकि–रामायण काव्यानुशीलन

11ज्ञानवल्क्यस्मृति

12रामायण 2/48/19

13रामायण 2/112/21

14रामायण 4/25/7

15वाल्मीकि–रामायण काव्यानुशीलन

16यजुर्वेद –36/22

17रामायण 6–18–34

18वाल्मीकि रामायण काव्यानुशीलन

19वाल्मीकि रामायण काव्यानुशीलन?

20रामायण 1/4/17

21रामायण 1/4/71

22रामायण 5/66/15

23रामायण 1/4/33